# देवी सरस्वती पर एक अध्ययन - शोधप्रवृत्तयः एवं व्याप्तिः

अजय कुमार शर्मा, (संस्कृत विभाग), शोध विद्वान, सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

## सारांश

भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म में देवी सरस्वती का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। देवी सरस्वती को विद्या, बुद्धि, ज्ञान, संगीत, कला, साहित्य एवं वाणी की अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूजा जाता है। भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपराओं में उनका विशेष महत्व रहा है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य देवी सरस्वती के धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्वरूप का अध्ययन करना तथा उनसे संबंधित विभिन्न शोध प्रवृत्तियों एवं अध्ययन की व्यापकता का विश्लेषण करना है। वैदिक साहित्य में सरस्वती का उल्लेख नदी एवं ज्ञान की देवी, दोनों रूपों में प्राप्त होता है। कालांतर में पुराणों, उपनिषदों, धार्मिक ग्रंथों एवं भारतीय साहित्य में उनका स्वरूप ज्ञान, विवेक, सृजनशीलता और आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक के रूप में विकसित हुआ। देवी सरस्वती का स्वरूप श्वेत वस्त्र, वीणा, पुस्तक, माला एवं हंस जैसे प्रतीकों के माध्यम से ज्ञान, पवित्रता, संगीत, साधना और विवेक का संदेश प्रदान करता है। इस अध्ययन में देवी सरस्वती की उत्पत्ति, पौराणिक मान्यताओं, वैदिक संदर्भों, प्रतिमा विज्ञान, उपासना पद्धति तथा भारतीय शिक्षा एवं कला परंपरा में उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, आधुनिक समय में सरस्वती उपासना की प्रासंगिकता तथा शिक्षा, साहित्य, संगीत और सांस्कृतिक चेतना के क्षेत्र में उनके प्रतीकात्मक महत्व को भी समझने का प्रयास किया गया है। शोध की व्यापकता धार्मिक ग्रंथों, साहित्यिक स्रोतों, ऐतिहासिक तथ्यों एवं सांस्कृतिक परंपराओं तक विस्तृत है। निष्कर्षतः देवी सरस्वती भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रतीक हैं, जिनकी उपासना मानव जीवन में ज्ञान, विवेक, नैतिकता एवं सृजनात्मकता के विकास की प्रेरणा प्रदान करती है।

**मुख्य शब्द: देवी सरस्वती, भारतीय संस्कृति, वैदिक साहित्य, ज्ञान एवं विद्या, सरस्वती उपासना, पौराणिक परंपरा, धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण, शोध प्रवृत्तियाँ, सांस्कृतिक चेतना भारतीय ज्ञान परंपरा**